19 Guru kool_style sheet Josh fin.qxd 31-10-2013 17:49 Page 1

Ignite Your Creativity

Profile at a glance :

Dr. Darlie Koshy

Age: 58 years
Qualification: Ph.D. from IIT, Delhi, M.B.A.
USP : Fashion & Design Education, Apparel Marketing & Merchandising
Special attribute: Innovative thinking and Idea Generation
Current Position : DG & CEO, ATDC & IAM from 2008
Previous Position : Director, NID, Ahmedabad, Founding Faculty Member, NIFT, Delhi
Books : *Garment Exports:Winning Strategies, Effective Export Marketing of Apparel to US, EU & Japan, Indian Design Edge*
Hobby: Reading, Writing, Travelling
Ideal person: Jesus, M.K. Gandhi and Mr. Ratan Tata
Ambition: To change India for a better tomorrow.
Hidden desire: To write some fiction in English and probably in Malayalam.

अगर वाकई कुछ बड़ा करना है, तो क्रिएटिव और इनोवेटिव बनें, क्योंकि इसके बिना कुछ भी नहीं होने वाला, बता रहे हैं एनआईडी के एक्स डॉयरेक्टर, एटीडीसी के डीजी और आईएएम के सीईओ डॉ. डॉर्ली कोशी

हमारे देश के स्टूडेंट्स में बहुत कम क्रिएटिविटी है। इसके लिए दोषी वे नहीं हैं, बल्कि हमारी सोसायटी और सिस्टम इसके लिए जिम्मेदार है। हमारे यहां ट्रेडिशनल ट्रेंड को लेकर सोसायटी बहुत रिजिड है। अगर कोई कुछ नया करने की कोशिश करता है, तो उसकी टांग खींच दी जाती है।

क्रिएटिविटी जरूरी है

हमारे स्टूडेंट्स कुछ क्रिएटिव करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें दिशा देने वाला कोई नहीं। अक्सर मैं अपने स्टूडेंट्स से बात करता हूं, तो वे यही कहते हैं कि हम फैशन के फील्ड में कुछ क्रिएटिव करने आए हैं, लेकिन वह क्रिएटिव क्या है, ये किसी को क्लियर नहीं है। खासकर अगर किसी को अपैरेल डिजाइनिंग की फील्ड में आना है, तो पहली शर्त क्रिएटिविटी ही है।

विजन डेवलप करना होगा

वेस्टर्न कंट्रीज के लोग हमारे यहां आते हैं। यहीं के डिजाइंस देखते हैं, यहीं की सोसायटी से लर्न करते हैं और अपने यहां जाकर एक नई डिजाइन लांच कर देते हैं और हमारी सोसायटी उसकी तारीफ करती है। इसका मतलब यही है कि हमारे पास विजन ही नहीं है कि हम कुछ इनोवेटिव करें। हम जो करते हैं, बस पैसे और बेसिक रिस्पॉन्सिबिलिटी पूरी करने के लिए करते हैं, ऐसी अप्रोच बदलनी होगी।

ऑब्जर्व, रिलेट ऐंड क्रिएट

एक तो बाई बर्थ क्रिएटिविटी होती है। कुछ नया करने की ललक आपको धीरे-धीरे इनोवेटिव बनाती जाती है। इसके लिए सबसे जरूरी है ऑब्जर्वेशन। आप किसी भी फील्ड में काम कर रहे हों, जब तक उससे रिलेटेड चीजों को ठीक से ऑब्जर्व नहीं करेंगे, आप कुछ नया नहीं कर पाएंगे। ऐसा तभी हो पाएगा, जब आप पूरे मन से उस फील्ड में आएं। अपना 100 परसेंट देना होगा, तभी आप सक्सेस भी हो पाएंगे।

सक्सेस रिलेटिव है

सक्सेस रिलेटिव चीज है। सक्सेस के लिए सबके पैमाने अलग हैं। किसी के लिए डॉक्टर, इंजीनियर बनना सक्सेस है, तो किसी के लिए ढेर सारा पैसा कमाना, तो वहीं किसी के लिए बड़ा आर्टिस्ट बनना। सबके लिए सक्सेस का पैमाना अलग-अलग होता है। कुछ लोग 9 से 6 की परमानेंट जॉब और अच्छी-सी लड़की से शादी को ही सक्सेस मानते हैं। वे सोचते हैं कि लाइफ सेट हो गई, लेकिन कुछ लोगों के लिए ये कुछ नहीं है।

सबसे जरूरी सैटिस्फैक्शन

सक्सेस के लिए सेल्फ सैटिस्फैक्शन जरूरी है। आप जो काम कर रहे हैं, जब तक उसे एंज्वॉय नहीं करेंगे, तब तक आपको लगता रहेगा कि आप सक्सेस नहीं हुए और सक्सेस की तलाश में परेशान रहेंगे, लेकिन सक्सेस हाथ नहीं आएगी। हर नई उपलब्धि के बाद आपको यही महसूस होगा कि मैं तो हार गया हूं, मेरे पास कुछ नहीं।

इवैल्यूएट योरसेल्फ

दूसरों की बातें सुनकर खुद को बदलना छोड़ें। दूसरे क्या कहते हैं, इससे ज्यादा इंपॉर्टेंट यह है कि आप अपने बारे में क्या सोचते हैं। आप अपनी नजरों में क्या हैं? अपनी पर्सनैलिटी और अपने कार्यों को इवैल्यूएट करें। फिर आप होंगे सक्सेस, क्योंकि काम करने वाले ईमानदार इंसान कभी अनसक्सेस हो ही नहीं सकते।

■ **इंटरैक्शन : मिथिलेश श्रीवास्तव**